B.A. (Part - 3)
Paper - VI

12/08/020

President Roosevelt and the New Deal

4 मार्च, 1933 ई० को जब रूजवेल्ट ने राष्ट्रपति का पद ग्रहण किया तो अर्थव्यवस्था की स्थिति अत्यन्त गंभीर एवं पेचीदा हो गयी थी। रूजवेल्ट ने सत्तारूढ़ होते ही सर्वप्रथम कार्य देश को आर्थिक संकट से मुक्त कराने के लिए आरंभ किया। उसने अपने उद्देश्यों को इस प्रकार से व्यक्त किया: "हमारा कार्य अभी उन साधनों और संस्थाओं का नियंत्रण करना है जो हमारे पास हैं। अतिरिक्त उत्पादन के लिए विदेशी बाजार प्राप्त करना और उपभोग, अर्द्ध-उपभोग, धन और उत्पादन के समान वितरण की समस्याएं बाद की चीजें हैं।" 6 मार्च 1933 ई० को ही एक आपातकालीन घोषणा में उसने राष्ट्र भर में बैंक भुगतान स्थगन की घोषणा की तथा स्वर्ण के आने-जाने पर रोक लगा दी। इसी दिन से स्वर्णमान को समाप्त कर दिया। इस संबंध में दो विधेयकों को पारित किया गया जिन्हें दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है — प्रथम, तत्कालीन और आवश्यक समस्याओं से संबंधित तथा द्वितीय, स्थायी उन्नति से सम्बन्धित। इन दोनों प्रकार के विधेयकों को क्रमशः सहायता एवं पुनरुत्थान तथा सुधार और पुनर्निर्माण की संज्ञा दी गयी तथा इन्हें सामूहिक रूप से नया कार्यक्रम या New Deal का नाम दिया गया जिसका मुख्य उद्देश्य एक अधिक टिकाऊ समृद्धि का निर्माण करना था।

रूजवेल्ट की न्यू डील नीति को चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :→

(A) प्रथम वर्ग की नीतियाँ :—

औद्योगिक नीति :→ आर्थिक संकट ने उस समय औद्योगिक अवसाद उत्पन्न कर दिया था। रूजवेल्ट का यह विचार था कि औद्योगिक मन्दी इस कारण से हुई है कि उद्योगपतियों को पर्याप्त लाभ नहीं हो रहा है, वे हानि उठा रहे हैं। लाभ इसलिए नहीं हो रहा है कि वस्तुओं का मूल्य बहुत ही घट गया है और वस्तुओं का मूल्य इसलिए घट गया है कि अत्यंत ही अधिक प्रतियोगिता हो गयी है। अतः इसका अर्थ यह हुआ कि प्रत्युत्थान के लिए लाभ में वृद्धि आवश्यक है जिसके लिए प्रतियोगिता में कमी करना आवश्यक है। सरकार ने अधिक निवेश करने की चेष्टा की और निवेश के लिए उत्प्रेरणा देने के लिए व्यवस्था की। रूजवेल्ट ने इस क्षेत्र में पाँच उपाय किया :—

(1) राष्ट्रपति की विधायिका द्वारा 33,000 डॉलर लोक कार्यों पर व्यय करने के लिए प्राधिकृत किया गया। लोक कार्य पर व्यय द्वारा अधिक रोजगार और फलतः वस्तुओं के लिए अधिक माँग की सृष्टि की जा सकती थी।

(2) सरकार ने प्रत्येक उद्योगपति को एक औद्योगिक संहिता बनाने के लिए अनुदेश दिया जो उचित एवं उचित प्रतियोगिता की व्यवस्था कर वस्तुओं के मूल्यों को ऊँचा रख सकती थी।

(3) श्रमिक संघों द्वारा सामूहिक मोल भाव की व्यवस्था करने के लिए विधायिका ने कुछ विधियाँ निर्मित की।

Scanned with CamScanner

रूजवेल्ट का मत था कि प्रत्युत्थान के लिए यह आवश्यक है कि जनता अधिक से अधिक वस्तुओं का क्रय करें और यह तभी संभव है जब जनता की आय अधिक हो। इसके लिए वेतन, मजदूरी भी अधिक होनी चाहिए।

(4) राष्ट्रपति को न्यूनतम मजदूरी, कार्य करने के लिए अधिकतम घंटे एवं सेवा की अन्य शर्तों को निर्धारित करने के लिए प्राधिकृत किया गया।

(5) इस समय कुछ काल के लिए डेमोक्रेटिक दल को परम्परागत प्रतियोगिता विरोधी नीति का त्याग कर दिया गया था। राष्ट्रीय औद्योगिक प्रत्युत्थान अधिनियम सन् 1933 से 1935 तक लागू होता रहा किन्तु सन् 1935 में सर्वोच्च न्यायालय ने इसे असंवैधानिक घोषित कर दिया। अतः यह समाप्त हो गया।

(B) द्वितीय वर्ग के उपाय :-

कृषि नीति :- सन् 1929 ई० से ही कृषि प्रत्युत्थान के लिए प्रयास किए जा रहे थे। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने फसल प्रतिबंध की नीति अपनायी। यह एक पृथक अधिनियम सन् 1933 ई० में निर्मित किया गया जिसे कृषि समायोजन अधिनियम कहा गया है।

क्रमशः